छुटकारे का इतिहास – भाग 2

अध्याय 10: विजयी साहस

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है, और आशा है कि आपके पास है, तो मेरे साथ यहोशू 1 पर आएँ। मैं आपको नहीं बता सकता कि इस विश्वास के परिवार का हिस्सा बनकर मैं कितनाा कृतज्ञ हूँ। जब भी मैं यहाँ से बाहर जाता हूँ तो सर्वदा अपने विश्वास के परिवार को याद करता हूँ। केवल विश्वास के परिवार का हिस्सा बनकर ही नहीं, परन्तु मैं उस कार्य का हिस्सा बनकर कृतज्ञ हूँ जो परमेश्वर हमारे बीच में कर रहा है और हमारे जीवनों के द्वारा कर रहा है। एक साथ समय बिताने के द्वारा हम बहुत कुछ सीखते हैं। पिछले दो सप्ताहों से हम आन्तरिक शहर में सुसमाचार को लेकर जाने की बात कर रहे हैं। और मेरी आशा है कि आप उसके बारे में प्रार्थना करते रहे हैं।

मुझे कुछ ईमेल सन्देश मिले जो इस प्रार्थना के फलस्वरूप निद्रारहित रातों के बारे में थे, परन्तु इस बात के लिए प्रार्थना करना अच्छा है। और अभी तक यदि आपने इसके लिए प्रार्थना और उत्तर की प्रतीक्षा नहीं की है, परमेश्वर से पूछें, "क्या आप चाहते हैं कि मैं या मेरा परिवार ईस्टलेक या गेट सिटी में जाए?" यदि आप इस प्रार्थना को करने के इच्छुक नहीं हैं, तो इसका क्या मतलब है? आप इसके बारे में सोचें, इसका मतलब है कि हम वास्तव में परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि परमेश्वर हम में से प्रत्येक को वहाँ जाने की अगुवाई देगा, परन्तु – परन्तु हम सब को एक ऐसे बिन्दू पर आना है जहाँ हम यह कहने के लिए तैयार हों, "आप जो कुछ चाहते हैं मैं उसे करूँगा," क्योंकि यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो यह इस बात का संकेत है कि हम स्वयं परमेश्वर पर भरोसा करने से अधिक अपने समुदाय और अपनी विद्यालय प्रणाली और अपनी सुरक्षा पर भरोसा करते हैं जिसे हम उत्पादित कर सकते हैं।

और परमेश्वर हमारे भरोसे के योग्य है। वह भला है। हमें कभी भी परमेश्वर से यह पूछने में भयभीत नहीं होना चाहिए, "क्या आप चाहते हैं कि मैं यह करूँ?" क्योंकि वह हमारा पिता है। वह उसे चाहता है जो हमारे लिए और उसके लिए सर्वोत्तम है। वह हमारी बुराई नहीं चाहता है। वह हमारे लिए सर्वोत्तम चाहता है, और इसलिए हमें परमेश्वर से यह पूछने में कभी डरने की आवश्यकता नहीं है कि, "आप मुझ से क्या करवाना चाहते हैं?" बिना किसी शर्त के, जो भी हो मैं करूँगा।

यही सुसमाचार की खूबसूरती है। यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे हम अपनी मसीहियत में बढ़ाते हैं। यह ऐसा ही है। यह मूलभूत मसीहियत है। यीशु ने कहा, "यदि तू मेरे पीछे आना चाहे तो अपना सब कुछ छोड़कर मेरे पीछे हो ले।" आपको अपने आप का इनकार करना है। अपना क्रूस उठाना है। अपने आप के लिए और अपने विचारों के लिए मरना है। आप उनके लिए मर चुके हैं। यदि आप मसीह के अनुयायी हैं, तो आप उन बातों के लिए मर चुके हैं, और, वह कहता है, "मेरे पीछे हो ले।"

और यही सुसमाचार की खूबसूरती है। मत्ती 13:44 को याद करें। मत्ती 13:44 को भूल न जाएँ। यह प्रचार से पहले से प्रचार के समान है, परन्तु यह इसके योग्य है। मत्ती 13:44, आपको याद है एक व्यक्ति खेत में खजाना मिलता है जिसकी कीमत उस से कहीं अधिक थी जो उसके पास था या कभी उसके पास हो सकता था। और दूसरा कोई इस खजाने को नहीं देखता है, और वह जाकर क्या करता है? वह अपना सब कुछ बेच देता है, और पद बताता है कि वह इसे खुशी से करता है। वह खुशी से वह सब दे देता है जो उसके पास था। लोग उसके पास आकर कहते हैं, "तुम पागल हो। तुम क्या कर रहे हो? तुम अपना सब कुछ बेच रहे हो।" और वह कहता है, "मैं उस खेत को खरीदने जा रहा हूँ।"

"तुम पागल हो। उस खेत को खरीदकर तुम क्या करोगे?" और वह उन्हें देखता है और एक मुस्कराहट के साथ कहता है, "मुझे कुछ मिला है।" क्योंकि वह जानता है कि उसे कुछ ऐसा मिला है जिसके लिए वह सब कुछ त्याग सकता है। और भाइयो और बहनो, हमने एक ऐसे व्यक्ति को पा लिया है जिसके लिए हम सब कुछ खो सकते हैं। और इसलिए हमें इस संसार के पीछे भागने या उसकी वस्तुओं के पीछे जाने की आवश्यकता नहीं है। मसीह में हमारे पास सर्वोच्च सन्तुष्टि और आनन्द और खुशी है, जो हर बात से मूल्यवान है, इस संसार की सारी वस्तुओं के योग से भी बढ़कर।

और इसलिए हम इस सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, और इस कारण बैठे रहने वाली मसीहियत के लिए कोई स्थान नहीं है। हमारे लिए एक स्थान को रखना आखरी बात है। हम सुसमाचार को जी रहे हैं, जिसका मतलब है कि हमने एक अच्छे, आरामदायक अमरीकी जीवन के स्वप्न को पीछे छोड़ दिया है और हम मसीह के पीछे चलने के लिए हम अपने जीवनों को त्याग रहे हैं, और इस प्रक्रिया में, हम देखेंगे कि वह उन सारी वस्तुओं से कहीं अधिक मूल्यवान है जिन्हें हम कभी प्रिय जानते थे।

इसलिए आइए हम एक साथ मिलकर यह प्रार्थना करें। यदि आपने ईमानदारी से यह प्रार्थना नहीं की है, तो इस सप्ताह मैं आपको उत्साहित करता हूँ कि परमेश्वर के साथ अपने जीवन में जाँचें कि क्यों आपने

यह नहीं कहा है, "हे परमेश्वर, मैं, हम, यह करेंगे, यदि आप हमसे यही चाहते हैं।" और एक बार यह खाली चैक उसके सामने रखने पर हो सकता है कि परमेश्वर हमें किसी नये बिन्दू पर, या समर्पण पर लाए, और फिर यह जानने में आजादी है कि आपका जीवन आपका अपना नहीं है।

ठीक है, यह प्रचार से पहले के प्रचार का अन्त है।

आप जानते हैं, यह पिछले सप्ताह के अन्त में था, यदि आप ऑपरेशन वर्ल्ड को कर रहे हैं, और मेरी आशा है कि आप कर रहे हैं – यदि नहीं, तो अब शुरू कर दें। परन्तु पिछले सप्ताह के अन्त में, ब्रूनेई के लिए प्रार्थना की गई, और मेरा अनुमान है कि हम में से कुछ लोग ब्रूनेई के बारे में नहीं जानते थे। एक छोटा देश, 400,000 लोग, मलेशिया के पूर्व में। यदि आप प्रार्थना कर रहे थे, तो आपने देखा होगा कि वहाँ कितने मसीही हैं – वहाँ के लोग मुख्यतः मलय समूह के लोग हैं। ब्रूनेई के मलय समूह के लोगों में कितने मसीही हैं। शून्य। वहाँ 100 प्रतिशत मुसलमान हैं, और वे इसके लिए पूरा प्रयास कर रहे हैं कि यह ऐसा ही बना रहे।

एक मसीही वहाँ घूमने के लिए भी नहीं आ सकता है। बाइबल की अनुमति नहीं है। हर विद्यालय में जब धर्म की बात आती है तो केवल इस्लाम सिखाया जाता है। और मेरे और आपके पास, हमारे परिवारों में, हमारे घरों में, प्रार्थना करने का अवसर है कि हम ब्रूनेई में सुसमाचार के प्रसार और ब्रूनेई में सुसमाचार और मसीह की महिमा के भाग बनें। अपने घुटनों और अपने चेहरे के बल हमें यह करना है, पूरे संसार के लिए प्रार्थना करनी है, और हम यही कर रहे हैं। पिछले सप्ताह हम ब्रूनेई, बुर्किनो फासो और कैमरून और कम्बोडिया और कनाडा और केन्द्रीय अफ्रीकी गणराज्य में थे। और हम पूरे संसार के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।

दूसरा, पूरे वचन को पढ़ना। इस माह अपन बाइबल पठन में हम वह पढ़ रहे हैं जहाँ परमेश्वर हमें ले जा रहा है। मैं कभी इतनी अच्छी तरह इसकी योजना नहीं बना सकता था। बाइबल का पठन अच्छी तरह चल रहा है। और हम पूरे वचन को पढ़ रहे हैं।

तीसरा, अपना समय दूसरे सन्दर्भ में बिताना। मैं एक बार फिर आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि इसस वर्ष आप सुसमाचार के साथ किसी दूसरे स्थान पर जाएँ।

मैं एक क्षण आगे छलाँग लगाना चाहता हूँ। एक पल में, हम भारत के बारे में बात करेंगे, परन्तु मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूँ, भारत ही वह एकमात्र स्थान नहीं है जहाँ हम वैश्विक रूप से जा रहे हैं। दूसरे सन्दर्भ में जाने के असंख्य – अनगिनत अवसर हैं। इसलिए व्यक्तिगत रूप में, परिवारों में, छोटे समूहों में, प्रार्थना करें, ठीक है? हे परमेश्वर, आप क्या चाहते हैं कि दूसरे सन्दर्भ में हम कहाँ जाएँ?

चौथा, समुदाय की बढ़ोतरी के लिए अपने जीवनों को समर्पित करना। चेलों को बनाने के द्वारा हम परमेश्वर की महिमा के लिए देशों पर प्रभाव डालते हैं। यह संबंधों की पृष्ठभूमि में होता है, और इसलिए हमें जान–बूझकर एक ऐसे समुदाय में होने की आवश्यकता है जो सुसमाचार को बढ़ावा देता है। छोटे समूह इसी के लिए हैं। अतः यदि आप किसी छोटे समूह में शामिल नहीं हैं, तो किसी छोटे समूह में शामिल हो जाएँ।

और फिर पाँचवाँ, विशिष्ट उद्देश्य के लिए अपने धन का त्याग करना। और इसके बारे में हमने बात की कि व्यक्तियों और परिवारों के रूप में, हम कलीसिया को देने के लिए अपने स्रोतों को मुक्त कर रहे हैं। अतः हम व्यक्तिगत रूप से त्याग कर रहे हैं, बचत कर रहे हैं, और अपने व्यक्तिगत बजट में कटौती कर रहे हैं ताकि हमारे पास देने के लिए अधिक हो, और फिर कलीसिया के रूप में, विश्वास के परिवार के रूप में हमारे बजट के साथ, हम संसार की आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं के लिए देने हेतु अपने स्रोतों को मुक्त कर रहे हैं। उन्हें दो क्षेत्रों में खर्च करने के लिए; स्थानीय रूप में, बर्मिंघम के आन्तरिक शहर में, जिसके बारे में हमने पिछले दो सप्ताह बात की। ईस्टलेक और गेट सिटी में जाने के बारे में।

आज हम इसके बारे में बात करेंगे कि हम अपने धन का त्याग करके उसे वैश्विक रूप में भारत में खर्च करेंगे, भारत में। और तस्वीर इस प्रकार है। हमने निर्णायक प्रयोग के लिए अपने बजट में लगभग 150 लाख अलग किए हैं। यदि आपको याद है, कलीसिया और पुरनियों ने दो अलग–अलग टीमों को नियुक्त किया; एक स्थानीय और दूसरी वैश्विक। पुरनियों, सेवकों, और कलीसिया के सदस्यों से निर्मित टीम, यह सोचने और बताने के लिए कि, "हम बर्मिंघम की आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं के लिए अपने धन का सर्वोत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं?" और टीम इस विचार के साथ लौटी कि हम ईस्ट लेक और गेट सिटी में क्या कर सकते हैं, और हमने उसके लिए लगभग 400,000.00 डॉलर का प्रावधान रखा। और फिर दूसरी टीम ने आकर कहा, "भारत में हम यह कर सकते हैं।" और उसी के बारे में हम आज बात करेंगे। हमारे पास 1,107,281.00 डॉलर शेष हैं जिनके साथ हम भारत की आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं पर ध्यान देंगे।

अब, स्पष्टतः, आप उन दो संख्याओं को देखते हैं और पाते हैं कि प्रतिशत में अन्तर है। स्थानीय की तुलना में भारत के लिए प्रतिशत कहीं अधिक है। यह अनिवार्यतः समान नहीं है, इसका मतलब यह है कि हम बर्मिंघम से अधिक भारत की चिन्ता करते हैं। तस्वीर यह है कि अन्त में बर्मिंघम में हम अत्यधिक स्रोत लगायेंगे, केवल धन ही नहीं, बल्कि समय और ऊर्जा भी, क्योंकि परमेश्वर ने हमें वहाँ रखा है। हम यहाँ रहते हैं, और बर्मिंघम के आन्तरिक शहर में जो हो रहा है उसका हम प्रतिदिन हिस्सा बन सकते हैं, और तरह से, हम में से प्रत्येक व्यक्ति, आसानी से भारत में नहीं पहुँच सकता है।

भारत में जाने के विभिन्न अवसर होंगे। आप अगले सप्ताह इसके बारे मे सुनेंगे। लेकिन शहर में जाने के समान, हम में से प्रत्येक व्यक्ति भारत में नहीं जा सकेगा। और फिर जब आप इसके बारे में सोचते हैं, भारत की विशाल आवश्यकताएँ – मेरा मतलब है, प्रति व्यक्ति डॉलर, तो हम ईस्ट लेक और गेट सिटी में भारत से कहीं अधिक खर्च कर रहे हैं। और मैं चाहता हूँ कि हम वहाँ की अत्यधिक जरूरत के बारे में सोचें।

और तस्वीर यह है। भारत, 1.1 अरब लोग। एक देश, 1.1 अरब लोग। और संभवतः, 1.1 अरब विभिन्न प्रकारों के लोग। अक्सर जब हम भारत के बारे में सोचते हैं, हम सोचते हैं, कि यह एक देश है, इसलिए एक समान ही होगा। लेकिन ऐसा नहीं है। भारत में विविध आयाम, अलग–अलग भाषाएँ, अलग–अलग जातियाँ, अलग–अलग धर्म, विविध संस्कृतियाँ, विविध परम्पराएँ हैं। भारत विशाल है, लेकिन यह एक समान नहीं है। हर स्थान एक समान नहीं है। यह एक जटिल देश है। 1.1 अरब लोग एक देश में अत्यधिक आवश्यकताओं के साथ।
संसार के 41 प्रतिशत भाग निर्धन। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? संसार के लगभग आधे निर्धन एक ही देश में। संयुक्त राज्य की पूरी जनसंख्या से भी अधिक लोग भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं। ग्रामीण निर्धन हैं, वे स्थान जहाँ कुछ माह पूर्व हम गए थे, जहाँ लोग प्रतिदिन 50 सेन्ट में जीवनयापन करने का प्रयास कर रहे हैं, स्वच्छ जल की कोई व्यवस्था नहीं है, स्वच्छता न होने से रोग तीव्रता से फैलते हैं।

हम मुम्बई में धारावी की झुग्गियों में गए थे, और धारावी की झुग्गियाँ, एशिया की सबसे बड़ी झुग्गियों में से एक, जहाँ दस लाख लोग, लगभग 400 एकड़ के क्षेत्र में रहते हैं। उनमें से 100,000 बच्चों का कोई ठिकाना नहीं है, 200,000 लोग एचआईवी/एड्स से ग्रस्त हैं, सफाई व्यवस्था अत्यधिक खराब है।

आवश्यकता – यह चौंकाने वाली है, चकित करने वाली है, भौंचक्का कर देने वाली है। यदि ब्रूक हाइलैण्ड की अवस्था ऐसी होती तो हम निश्चित तौर पर अपनी मसीहियत को बेकार वस्तुओं से नहीं भरते और अपने आप को अधिक वस्तुएँ एकत्रित करने के लिए खर्च नहीं करते। और विश्वास के परिवार के रूप में हम कह रहे हैं कि हम अपनी आँखें उस तथ्य के लिए खोल रहे हैं जो वास्तविक है, और उस यथार्थ से हम अपने कानों और अपनी आँखों को नहीं फेरेंगे, और उन लोगों की खातिर हम अपनी मसीहियत को यहाँ जीयेंगे।

और आप इसे कर रहे हैं, आप इसे कर रहे हैं, और परमेश्वर के अनुग्रह के लिए मैं उसका धन्यवाद करता हूँ, जो विश्वास के परिवार के रूप में आप में जीवन्त है। आपके लिए यह कहना – इस पतझड़ में हम याकूब का अध्ययन कर रहे थे, आपके लिए यह कहना कि, "कुशल से रह। यह कितना फायदेमन्द है?" हम कहते हैं कि हम सुसमाचार पर विश्वास करते हैं। संसार भर के हमारे भाइयों और बहनों से हम कहते हैं, "जाओ, हम तुम्हारे कुशल की कामना करते हैं। गर्म रहो और तृप्त रहो," परन्तु उनकी आवश्यकताओं के लिए कुछ न करो। और इसलिए हमने पाँच लाख डॉलर के लगभग निर्णायक प्रयोग के लिए अलग किए, यह बताने के लिए कि हम आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में भागीदार बनना चाहते हैं, और हमने कम्पैशन इन्टरनैशनल के द्वारा 21 समुदायों में 21 कलीसियाओं के साथ भागीदारी की, जहाँ ऐसे सन्दर्भ सामने आ रहे हैं जिन में बच्चों के जीवित रहने का प्रतिशत संसार के अधिकाँश भागों से काफी कम है, और हम कह रहे हैं कि हम भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करना चाहते हैं, और स्थानीय कलीसिया के द्वारा सुसमाचार की घोषणा और प्रदर्शन कर रहे हैं।

और यहाँ पर मैं चाहता हूँ कि हम इन विशाल संख्याओं को, विशाल आवश्यकता को लें, और उसे अपने निजी विश्वास पर लाएँ। मैं आपको एक ऐसी माँ के बारे में बताना चाहता हूँ जो उन कार्यक्रमों में से एक का हिस्सा है जिन्हें भारत में चलाने के लिए हम इन कलीसियाओं के साथ भागीदार हैं। और मैं चाहता हूँ कि आप इस पर ध्यान दें, और मैं चाहता हूँ कि आप अपने अन्दर परमेश्वर के अनुग्रह के महान प्रमाण को देखें।

आप इस तस्वीर के बारे में सोचें, इस तथ्य के बारे में कि एक स्त्री थी जिसने कभी सुसमाचार नहीं सुना था, कभी मसीह के बारे में नहीं सुना था, ऐसे सन्दर्भ में रहती थी जहाँ बच्चों को बेच दिया जाता है, क्योंकि परिवारों में उनकी देखभाल करने की क्षमता नहीं है। कुछ समुदायों में जहाँ हम गए, बच्चों को ऐसे ही फेंक दिया जाता था क्योंकि परिवार उनकी देखभाल नहीं कर सकते और उनकी जरूरतों को पूरा नहीं

कर सकते। और उस महिला को पता चलता है कि वह गर्भवती है। वह जानती है कि वह उस बच्चे की देखभाल नहीं कर सकती है, और उसे पता चलता है कि एक कलीसिया है जो उसकी सेवा करना चाहती है, एक कलीसिया जिसके साथ हाथ मिलाने का हमें अवसर मिला। और अ बवह अपने जीवित बच्चे के साथ है और बताती है कि कैसे उसने सुसमाचार को जाना, और वह चाहती है कि हम मसीह में उसके उद्धार के लिए प्रार्थना करें जिसे हमने पूरे भारतवर्ष में फैलाया है।

यह अच्छा है। मैं उस सुसमाचार के लिए परमेश्वर की स्तुति करता हूँ जो आपके अन्दर है। तस्वीर यह है। और हमने जो कुछ किया है, हम इस बिन्दू पर आए हैं और हमने कहा, "ठीक है, अब इस निर्णायक प्रयोग की तस्वीर के साथ 2010 में हम कैसे और अधिक कर सकते हैं।" और इसलिए यह टीम विशाल भारत को देखने लगी, जिस प्रकार ईस्ट लेक और गेट सिटी पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रभु ने हमारी अगुवाई की, उसी प्रकार प्रभु ने हमें उत्तरी भारत पर कुछ अधिक ध्यान देने की अगुवाई दी। और इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप विशेष रूप में उत्तरी भारत के बारे में सुनें, क्योंकि ये शिशु रक्षा कार्यक्रम अधिकाँशतः उत्तरी भारत में ही स्थित हैं जिनमें हम भागीदार हैं, और हमारे ज्यादातर सम्पर्क और संबंध भी वहीं पर हैं। और इसलिए हम उत्तरी भारत पर ध्यान देने लगे, 60 करोड़ लोग, दिल्ली से कलकत्ता तक, विशाल उत्तरी भारत में, गंगा के मैदानी इलाकों में फैले हुए हैं।

हमारे पुराने सम्पर्कों के अतिरिक्त, उत्तरी भारत के प्रति आकर्षित होने के विशेषतः दो कारण हैं। पहला, सुसमाचार से वंचित होना। उत्तरी भारत में 0.5 प्रतिशत से भी कम सुसमाचारीय मसीही हैं, और यह एक उदार अनुमान है। 0.5 प्रतिशत से भी कम। अब, ऐसा नहीं है कि दक्षिणी भारत में ढेर सारे मसीही हैं, परन्तु वहाँ उत्तरी भारत से अधिक मसीही हैं। इसके बारे में सोचें, 60 करोड़ लोगों में से, 99.5 प्रतिशत लोग मसीह के बिना जी रहे हैं, और अपने पाप के कारण परमेश्वर के दण्ड के अधीन हैं। और यह इस यथार्थ का भी प्रतिनिधित्व नहीं करता है कि उस प्रतिशत में से, 99.5 प्रतिशत में से, बहुत से लोग सुसमाचार से वंचित हैं और उनका सुसमाचार से कोई वास्ता नहीं है।

अन्य शब्दों में, उन्होंने कभी यह भी नहीं सुना है कि एक उद्धारकर्ता है जो उन्हें उनके पापों से छुड़ा सकता है। उत्तरी भारत सुसमाचार से वंचित लोगों से भरा है। लोग खोए हुए हैं – ग्रामीण खोए हुए हैं। ऐसे गाँव हैं जहाँ लोगों ने कभी, पीढ़ियों तक, मसीह के नाम का प्रचार भी नहीं सुना है। ग्रामीण, सुदूर क्षेत्र, जिन्होंने कभी सुसमाचार को सुना ही नहीं है।

और उन गाँवों में जाना और सुसमाचार सुनाना और यह जानना कि इसे पहली बार यहाँ सुना जा रहा है, जो इससे पहले कभी उन तक नहीं पहुँचा है, और फिर दिल्ली या कलकत्ता जैसे बड़े शहरों में रहना और इस सघन आबादी वाले क्षेत्र को देखना, इसकी कल्पना करें। हर जगह आपको लोगों के चेहरे नजर आते हैं, और आपको पता चलता है कि इन सारे चेहरों में से जिन्हें आप देखते हैं, शायद केवल एक ही व्यक्ति विश्वासी है, एक व्यक्ति जो मसीह की शान्ति और प्रेम को जानता है, और अधिकाँश लोग जिन्हें आप देखते हैं उन्होंने कभी सुसमाचार को नहीं सुना है। यह आश्चर्यजनक है। लोग खोए हुए हैं।

और आपने तस्वीरों में देखा होगा, बहुत सी स्त्रियों के माथे पर एक लाल बिन्दू होता है, जिसे बिन्दी कहते हैं, सामान्यतः लाल बिन्दी, लेकिन हमेशा नहीं। यह मूलतः एक सांस्कृतिक सजावट है। इसकी एक पृष्ठभूमि है जहाँ इसका धार्मिक महत्व है कि माथा बुद्धि का केन्द्र है और यह बुद्धि के लिए परमेश्वर या ईश्वरों से की जाने वाली प्रार्थना हो सकती है जिनकी वे पूजा करते हैं, या यह बुराई या बुरे कर्म को दूर करने के लिए हो सकता है जो उनके मार्ग में आते हैं, परन्तु आज वास्तव में यह एक सांस्कृतिक सजावट अधिक है। और आपने देखा होगा कुछ बच्चों के माथे पर काली बिन्दी होती है और कुछ के माथे पर केवल काला निशान होता है, विविध प्रकार की तस्वीरें। यह केवल एक रिवाज है। इसके पीछे अंधविश्वास हैं और धार्मिक पृष्ठभूमियाँ भी हैं, परन्तु वास्तव में इसके मूल में, यह वास्तव में भारत के धार्मिक परिदृश्य की विशाल संस्कृति की एक तस्वीर मात्र है।

उत्तरी भारत, लोग खोए हुए हैं, और दूसरा तत्व, अत्यधिक सताव। यहाँ पर मैं सावधान रहना चाहता हूँ। यह पृथक अधिक है। इसका मतलब यह नहीं है कि सारा भारत, सारे उत्तरी भारत विश्वासी अत्यधिक सताव सहते हैं, परन्तु उत्तरी भारत में कुछ स्थानों पर अत्यधिक सताव है। आप उत्तर–पश्चिम में जाएँ, भारत के उत्तर–पश्चिम में, पाकिस्तान के निकट, और आप उग्रवादी मुसलमानों के हाथों सताव को देख सकते हैं और इसी स्थान पर हम लगभग एक वर्ष पूर्व गए थे और वापस लौटकर हमने आपको एक भाई शमूएल के बारे में बताया था, जिससे हमें मिलने का अवसर मिला, जिसकी पत्नी को कुछ माह पूर्व ही उसके माता–पिता ने जहर दे दिया था क्योंकि वह मसीह के पीछे हो ली थी। ये यथार्थ हैं। उत्तर–पश्चिम भारत में अत्यधिक सताव है, मुसलमानों के हाथों, और उड़ीसा जैसे स्थानों में हिन्दू राष्ट्रवादियों के हाथों सताव। इनमें से कुछ समाचारों में भी आ चुका है, हिन्दू राष्ट्रवादियों द्वारा घरों को जलाना, पुरूषों और स्त्रियों से मारपीट करना और कुछ को मार डालना। कुछ स्थानों पर अत्यधिक सताव है। कुछ स्थानों पर अधिक सताव नहीं है, लेकिन सताव है।

और इसलिए जब हम प्रार्थना करते हैं – तो यही वह स्थान है जहाँ आत्मिक और भौतिक आवश्यकताएँ एक साथ मिलती हैं। हम क्या कर सकते हैं? जब आवश्यकता बहुत बड़ी हो तो हम वास्तव में क्या कर सकते हैं? हम यह करने जा रहे हैं। और अगले सप्ताह हम इसके बारे में कुछ और विस्तार से बतायेंगे, परन्तु मैं आपको केवल यह बताना चाहता हूँ कि वह 110 लाख कहाँ जा रहा है।

सबसे पहले, सैंकड़ों गाँवों में पहली बार सुसमाचार को पहुँचाना। हम कुछ अलग–अलग समूहों के साथ कार्य कर रहे हैं, और अधिकाँश समूह जिनके साथ हम कार्य कर रहे हैं वे देशी भारतीय विश्वासियों के समूह हैं। हम वहाँ की स्थानीय कलीसिया के साथ मिलकर सैंकड़ों गाँवों में पहली बार सुसमाचार पहुँचाने में उनकी सहायता कर रहे हैं। इस वर्ष, जब हम इन भारतीय भाइयों और बहनों के साथ, इन कलीसिया स्थापकों के साथ, देशी भारतीय कलीसिया स्थापकों के साथ मिलकर सहभागिता करते हैं तो सैंकड़ों गाँव पहली बार सुसमाचार को सुनेंगे। और यह एक तस्वीर है।

दूसरा, हजारों देशी कलीसियाई अगुवों को प्रशिक्षित करना। कलीसियाई सदस्यों, अगुवों, स्थापकों के लिए प्रशिक्षण। इसके द्वारा हम भारतीय कलीसियाई अगुवों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। पिछले सप्ताह हमें एक 22 वर्षीय भाई अनिल के बारे में जानकारी मिली, जो इस छोटी अवधि के प्रशिक्षण का हिस्सा था, जिसे हमारे सहभागियों ने स्थापित किया था। और अनिल इस छोटी अवधि के प्रशिक्षण में आया और गहराई में उतरता चला गया। इसे सुनें, पिछले वर्ष, अनिल ने 17 नये चेलेपन के समूहों को शुरू किया, जिन में से तीन घरेलू कलीसिया बन गए हैं। मैं ने पिछले वर्ष में क्या किया? कलीसिया में अनिल की अगुवाई में 260 से अधिक लोग मसीह के विश्वास में आ चुके हैं और उनमें से बहुतों ने बपतिस्मा भी ले लिया है। अब अनिल की अगुवाई में कुछ अगुवे हैं जो घरेलू कलीसियाओं की अगुवाई कर रहे हैं, परमेश्वर अपने राज्य के विस्तार के लिए उसको उपयोग कर रहा है।

इसलिए हम हजारों नहीं तो सैंकड़ों अनिलों को उत्साहित करने और उठाने का हिस्सा बनना चाहते हैं। और लोगों तक जाने, कलीसिया के अगुवों को उठाने की इस प्रक्रिया में, हम हजारों–लाखों लोगों को स्थानीय कलीसिया के द्वारा भोजन, जल और/या चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना चाहते हैं। पुनः, मुख्य बात इन सबको स्थानीय कलीसियाओं के द्वारा करना है। सीएसपी के लिए हम एक और वर्ष देंगे, जब हम कम्पैशन के द्वारा इन 21 विविध कलीसियाओं से एक साथ सहभागिता करते हैं, और फिर हम इन में से कुछ समुदायों और गाँवों में गए जहाँ शिशु रक्षा कार्यक्रम चल रहे हैं, और कलीसिया इन माताओं और उनके बच्चों, उनके परिवारों के लिए जल की आवश्यकता को पूरा करेगी, परन्तु यथार्थ यह है कि बहुत से

गाँवों में स्वच्छ जल की कोई सुविधा नहीं है। इसलिए हम पहचान करने लगे कि किस गाँव में स्वच्छ जल की आवश्यकता है और हम इसे उन तक कैसे पहुँचा सकते हैं। और हम उन सारे गाँवों में स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के लिए एक साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, और इसके परिणामस्वरूप इस वर्ष, हजारों लोगों को भोजन, जल और/या चिकित्सा सुविधा प्राप्त होगी।

और फिर अन्ततः, हम लाखों लोगों को उनकी अपनी भाषा में बाइबल उपलब्ध करायेंगे। इसके परिणामस्वरूप, लाखों लोगों को इस वर्ष उनकी भाषा में बाइबल मिलेगी। और इन सारी बातों के बारे में हम अगले सप्ताह बात करेंगे, परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप रूकें – मैं चाहता हूँ आप उस तस्वीर को देखें और रूककर यह सवाल पूछें, क्या इसको कोई मतलब है? जैसे, क्या अत्यधिक आत्मिक और भौतिक आवश्यकताओं के बीच अपने आप पर ध्यान देने और अपने आप में ही मगन रहने की बजाय मसीह की महिमा के लिए अपने आराम और अपने कार्यक्रमों को छोड़ने का कोई मतलब है। क्या यह इसके योग्य है? मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ कि आपने उसके लिए हाँ की है। और इस प्रकार कहा है कि यह इसके योग्य है। यह मसीह की महिमा के लिए अपनी जान की बाजी लगा देने के योग्य है।

अतः सौदा यह है। यदि हम इसे करते हैं, जैसे, यदि हम अत्यधिक आत्मिक और भौतिक आवश्यकता के स्थानों में वास्तव में सुसमाचार को जीना चाहते हैं, तो यह आसान नहीं होगा। यह कीमती होगा, इसके लिए – दो सप्ताह पूर्व हमने विश्वास के भय की बात की, आज साहस की जरूरत होगी। मेरा मतलब है, जब आप इसके बारे में सोचते हैं, बर्मिंघम में अत्यधिक आत्मिक और भौतिक आवश्यकता वाले स्थान उन से अधिक नहीं हैं जिन पर हम ध्यान दे रहे हैं, और संसार में उन स्थानों से अधिक आत्मिक और भौतिक आवश्यकता वाले स्थान नहीं हैं जहाँ हम ध्यान दे रहे हैं। आवश्यकताएँ चुनौतिपूर्ण हैं, आश्चर्यजनक हैं – जैसे, मानवीय विचार में, कुछ ऐसा करना बेहतर होगा जहाँ सफलता के अवसर कुछ अधिक हों, क्या नहीं? जहाँ अवरोध इतने कठिन न हों और यहीं पर मैं परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ हूँ, कि वह आज हमें यहोशू 1 पर लाया है।

यहोशू प्रतिज्ञा किए गए देश की सीमा पर खड़ा होकर एक ऐसे स्थान की ओर देख रहा है जहाँ 31 राजा और उनकी सेनाएँ रहती हैं। और वे मरूभूमि में घूमते रहे हैं, और उस से अपेक्षित है कि वह उनमें से प्रत्येक राजा और उसकी सेना को हराने में इन लोगों की अगुवाई करे। और यह कार्य पर उसका पहला दिन है, और परमेश्वर उसके पास आता और सुनें वह क्या कहता है। और मैं चाहता हूँ कि आप हर बार

उस शब्द को रेखांकित करें जब यहोवा यहोशू से कहता है, "हियाव बाँन्ध," या "दृढ़ हो जा।" हर बार उसे रेखांकित करें।

पद 1. यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था कहा, "मेरा दास मूसा मर गया है; इसलिए अब तू उठ, कमर बाँध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार होकर उस देश को जा जिसे मैं उनको अर्थात् इस्राालियों को देता हूँ। उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात् जिस जिस स्थान पर तुम पाँव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूँ। जंगल और उस लबानोन से लेकर परात महानद तक, और सूर्यास्त की ओर महासमुद्र तक हित्तियों का सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा। तेरे जीवन भर कोई तेरे सामने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूँगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूँगा, और न तुझ को छोड़ूँगा।

इसलिए हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा। इतना हो कि तू हियाव बाँन्धकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना; और उस से न तो दाहिने मुड़ना और न बाएँ, तब जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा काम सफल होगा। व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा। क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।"

तीन बार। इसे तीन बार रेखांकित करें। हियाव बाँध और दृढ़ हो जा। परमेश्वर ने यहोशू से तीन बार क्यों कहा, "हियाव बाँध और दृढ़ हो जा?" क्योंकि यहोशू अत्यधिक भयभीत था, और परमेश्वर ने इसी प्रकार इसकी योजना बनाई थी, कि वह उस देश के पार जाए और सोचे कि कोई मार्ग नहीं है।

यह जो हमारे सामने है उसकी तस्वीर है। हमारे मसीही जीवनों और कलीसिया के रूप में हमें एक प्रकार से ऐसी परिस्थितियों में रखा गया है जहाँ इस संसार के दृष्टिकोण से हमें भयभीत होना चाहिए। यदि कलीसिया के रूप में हम एक अच्छे, आरामदायक मसीही जीवन के अमरीकी स्वप्न को साकार करना चाहते हैं और अपने आप में मगन होना और अपने आपको खुश करना चाहते हैं, तो उसे हम परमेश्वर के बिना

कर सकते हैं। परन्तु जब हम अपना मुँह अपने आस–पास की और हमारे आस–पास के देशों की गहनतम, अन्धकारमय आवश्यकताओं की ओर करते हैं, तो हमें परमेश्वर की आवश्यकता होगी।

और उस पल परमेश्वर यहोशू से बात करता है, और वह कहता है, "हियाव बाँध और दृढ़ हो जा।" हियाव कहाँ से आता है, जब आप 31 राजाओं और उनकी सारी सेनाओं का सामना करने की कगार पर खड़े हों? पहला, उसे दिव्य वायदों पर भरोसा करना होगा। परमेश्वर मूसा से इस देश को देने का वायदा किया था– वास्तव में, यदि हमारे पास अधिक समय होता, तो हम देखते कि पद 3, 4, और 5 में लगभग उन्ही शब्दों का प्रयोग किया गया है जो परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण 11:24–25 में मूसा से कहे थे। वही वायदे।

और वास्तव में, यह इससे भी पुराना है। परमेश्वर ने अब्राहम से बात की और कहा, "मैं यह देश तुझे दूँगा।" याकूब से, इसहाक से, उसने कहा, "मैं यह देश तुम्हें दूँगा।" मूसा से, "मैं यह देश तुझे दूँगा," और अब वह इसे यहोशू से कह रहा है। परमेश्वर उसे देश दे दिया था।

पहली बार हम देखते हैं, "हियाव बाँध और दृढ़ हो जा," पद 6 में, वह कहता है, "हियाव बाँध और दृढ़ हो जा, "क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा।" मैं ने इसे उन्हें देने की शपथ खाई है, मैं ने इसे उन्हें देने का वायदा किया है। जिस स्थान पर तेरे कदम पड़ते हैं वह तेरा होगा, जिसका मतलब है कि परमेश्वर ने न केवल उन्हें देश दिया था, बल्कि परमेश्वर ने उन्हें देश की गारण्टी भी दी थी। इसमें कोई सन्देह, कोई सवाल नहीं है। परमेश्वर विशेष रूप से कहता है, यहाँ से वहाँ तक का क्षेत्र तुम्हारा है। एक अर्थ में यहोशू की पुस्तक में इस्राएल इस देश को अपने अधिकार में लेने वाला है, परन्तु एक अर्थ में यह देश पहले से ही उनका है। यह निश्चित है।

परमेश्वर ने अपने वायदों के द्वारा इसकी गारण्टी दी थी, ध्यान दें कि यहाँ अध्याय 1 में, परमेश्वर सारे विवरण नहीं देता है कि यह सब कैसे होगा, इन सारे युद्धों में यह सब कैसे होगा। क्या कई बार हम यही नहीं चाहते हैं? जब हमारे सामने कोई अनजानी सी, मुश्किल बात होती है, तो क्या हम यह जानना नहीं चाहते हैं कि यह सब कैसे होगा। हम सारे विवरणों को जानना चाहते हैं। यदि परमेश्वर हमें बता दे कि क्या होने वाला है, तो इस प्रक्रिया में हम कहीं अधिक आश्वस्त होंगे। इसे जानें, परमेश्वर सर्वदा विवरण नहीं देता है, परन्तु वह सर्वदा वायदे देता है, और विश्वास उसके द्वारा दिए गए वायदों पर कदम बढ़ाना और यह जानना है कि वह विश्वासयोग्य है, वह अपने आपको उन वायदों के प्रति विश्वासयोग्य दिखाने के लिए सारी परिस्थितियों में निर्देश देता और मार्गदर्शन करता है।

उसका हियाव दिव्य वायदों पर भरोसा करने से आएगा। दूसरा, उसे दिव्य आज्ञाओं की अनुमति देनी होगी। दूसरी बार हम देखते हैं, "हियाब बाँध और दृढ़ हो जा," यह पद 7 में है, और वह कहता है, "इतना हो कि तू हियाव बाँधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना," उस व्यवस्था के बारे में बताते हुए जो पुराने नियम इतिहास की इन आरम्भिक पुस्तकों में प्रकट होती है।

और तस्वीर यह है कि यहोशू को परमेश्वर की आज्ञा माननी है। यह रूचिकर है, इस सप्ताह जब आप यहोशू को पढ़ते हैं, आप देखेंगे कि वायदे के देश में इस्राएल की सफलता कभी भी उनकी तीक्ष्ण सैन्य रणनीति या निर्दयी सैन्य ताकत पर निर्भर नहीं है। उनकी सफलता सर्वदा परमेश्वर के वचन के पालन पर निर्भर है। और जब वे आज्ञाकारी होते हैं तो वे विजयी होते हैं और जब वे आज्ञा का उल्लंघन करते हैं तो वे हारते हैं। जब वे आज्ञाकारी होते हैं, तो कुछ लोगों को केवल संगीत के साथ एक दिन चिल्लाना होता है और दीवारें गिर जाती हैं। परन्तु जब वे अनाज्ञाकारी होते हैं, तो उनके सबसे ताकतवर पुरूष भी छोटे से नगर को नहीं जीत पाते हैं।

इस संसार की रीतियों के पीछे जाने से हियाव नहीं आता है। हियाव केवल परमेश्वर के वचन का पालन करने से आता है। यहोशू की पुस्तक में हम इसी तस्वीर को प्रकट होते देखते हैं।

और पद 8 में परमेश्वर उस से कहता है, "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना।" जल्दी से पुराने नियम में ध्यान का विचार, ध्यान में दो आयाम हैं। पहला, अपना मन इस बात पर लगाना कि परमेश्वर कौन है और उसने क्या कहा है। और परमेश्वर ने कहा, "यहोशू, परमेश्वर का वचन तेरे मन में रहे। अपना मन परमेश्वर के वचन पर लगा।" परन्तु ध्यान केवल यही नहीं है। ध्यान शब्द, यहाँ प्रयुक्त इब्रानी का शाब्दिक अर्थ है बुदबुदाना।

मुझे यह तस्वीर पसन्द है। ध्यान कुछ ऐसा था जिसे आप ऊँची आवाज में करते हैं। आप ऊँची आवाज में बोलते हैं। आप परमेश्वर के वचनों को बुदबुदाते हैं, और जब आप उन्हें बोलते हैं, उन्हें ऊँची आवाज में बोलते हैं, तो वह आपके दिल, दिमाग और जीवन में बैठ जायेंगे। इसलिए परमेश्वर का वचन उसके मन में होना चाहिए और परमेश्वर का वचन उसके मुँह में होना चाहिए।

और इस सप्ताह इसे पढ़ने के दौरान मुझे स्मरण दिलाया गया कि परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करने का यहोशू का अधिकार उसके द्वारा पूर्णतः परमेश्वर के वचन के पालन और परमेश्वर के वचन को बोलने पर निर्भर था। और वास्तविकता है कि कलीसिया के पासबान, पुरनिए के रूप में, मेरा अधिकार केवल परमेश्वर के वचन को बताने पर निर्भर है, मनुष्यों की रीतियों का पालन करने पर नहीं। और जब मैं या कलीसिया का कोई अगुवा हमें वचन की सीमा के बाहर बुलाता है, तो हमारे पास अधिकार नहीं होता है।

परन्तु जहाँ वचन स्पष्ट कहता है, तो हमारे पास आगे बढ़ने का सारा अधिकार होता है। उसे दिव्य आज्ञाओं को मानना है। हियाव दिव्य आज्ञाओं को मानने से आता है। आप जानते हैं कि जब आप दिव्य आज्ञाओं को मानते हैं और दिव्य वायदों पर भरोसा रखते हैं तो आपके अन्दर हियाव होता है। तीसरा, उसे परमेश्वर की उपस्थिति पर निर्भर रहना है।

तीसरी बार परमेश्वर कहता है, "हियाव बाँध और दृढ़ हो जा," पद 9 में वह कहता है, "हियाव बाँधकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।" उसने पहले कहा, "जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूँगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूँगा, और न तुझ को छोड़ूँगा।" वह एक ही बात को, दो अलग–अलग रीतियों से कहता है। तू अकेला नहीं रहेगा।

और यह विशाल था। संसार के दृष्टिकोण से, यहोशू को अत्यधिक भयभीत होना चाहिए था। यदि वह अपने बल पर होता तो उसके पास भयभीत होने के सारे कारण थे। यदि अपने सम्पूर्ण जीवन में आप अकेले हैं तो आपको भयभीत होना चाहिए। परन्तु आप अकेले नहीं हैं, हम अकेले नहीं हैं, यहोशू अकेला नहीं था। इसलिए परमेश्वर के संग, भयभीत होने की बजाय, यहोशू विजय के बारे में आश्वस्त हो सकता था।

इसके बारे में सोचें। उसने एक भी युद्ध नहीं लड़ा था, और उसे सम्पूर्ण देश को जीतने की गारण्टी दे दी गई थी। यही सुसमाचार है। यह एक महान कार्य है जब ब्रह्माण्ड का परमेश्वर आपसे कहता है, "इनमें से एक भी राजा से युद्ध करने से पहले, जीत आपकी है।" यह अच्छा है।

यहाँ तस्वीर यह है जब परमेश्वर की उपस्थिति आपके साथ है – यह रोमियों 8 है। यदि परमेश्वर आपके साथ है, तो कुछ भी आपके विरूद्ध नहीं हो सकता। यही हियाव है, दिव्य उपस्थिति पर निर्भर रहना। अन्ततः यह उसे इस बात की ओर लाता है कि उसे दिव्य वायदों पर भरोसा करना है, दिव्य आज्ञाओं का

पालन करना है, परमेश्वर की उपस्थिति पर निर्भर रहना है। इसलिए उसे परमेश्वर की महिमा के लिए जीना है।

मैं चाहता हूँ कि आप जल्दी से मेरे साथ यहोशू 24 पर आएँ। यह पुस्तक का अन्तिम अध्याय है, और मैं आपको इसे दिखाना चाहता हूँ। जब आप इसे निकाल रहे हैं, मेरे साथ इसके बारे में सोचें। यहोशू का नाम ही स्वयं से दूर परमेश्वर की ओर संकेत करता है। आपको याद है नाम में परिवर्तन जो हमारे अध्ययन में पहले हुआ, यहोशू का नाम? उसके नाम का अर्थ था बचाता है या छुड़ाता है, परन्तु उसके नाम को यहोशू में बदल दिया गया, जिसका अर्थ है यहोवा बचाता है या यहोवा छुड़ाता है। पवित्रशास्त्र में हम पहली बार देखते हैं कि किसी व्यक्ति को एक नाम दिया गया है जिसमें यहोवा का नाम शामिल है, और इसके पीछे एक कारण है। यहोशू का सम्पूर्ण जीवन इस यथार्थ की ओर संकेत करता है कि यहोवा ही बचाता है और यहोवा ही है जो छुड़ाता है। और इसलिए जब आप इस सप्ताह पढ़ते हैं और यहोशू को दिन–प्रतिदिन लोगों की अगुवाई करते हुए देखते हैं, तो जानें कि अन्तिम रूप में यहोशू लोगों की अगुवाई नहीं कर रहा है। यहोवा ही लोगों की अगुवाई कर रहा है। यह यहोशू नहीं है जो विजय दे रहा है, यहोवा ही विजय दे रहा है, यही मुख्य बिन्दू है।

जब आप यहाँ यहोशू 24 के अन्त में आते हैं, और वे देश में आ चुके हैं और परमेश्वर अपने लोगों से बात करता है, मैं चाहता हूँ कि आप हर उस स्थान को रेखांकित करें जहाँ परमेश्वर अपने लिए मैं शब्द का प्रयोग करता है। मैं चाहता हूँ कि आप उस प्रत्येक स्थान को रेखांकित करें जहाँ मैं शब्द दिखाई देता है। एक स्थान पर वह स्वयं के लिए वह शब्द का प्रयोग करता है।

परन्तु इसे देखें, यहोशू 24:2. यहोशू ने उन सब लोगों से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है।" परमेश्वर कहता है, और सुनें परमेश्वर क्या कहता है।

प्राचीन काल में अब्राहम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे। और मैं ने तुम्हारे मूलपुरूष अब्राहम को महानद के उस पार से ले आकर कनान देश के सब स्थानों में फिराया, और उसका वंश बढ़ाया। और उसे इसहाक को दिया; फिर मैं ने इसहाक को याकूब और एसाव दिया। और एसाव को मैं ने सेईर नामक पहाड़ी देश दिया कि वह उसका अधिकारी हो, परन्तु याकूब बेटों–पोतों समेत मिस्र को गया। फिर मैं ने मूसा और हारून को भेजकर उन सब कामों के द्वारा जो मैं ने मिस्र में किए, उस देश को मारा; और उसके बाद तुम को निकाल लाया।

और मैं तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र में से निकाल लाया, और तुम समुद्र के पास पहुँचे; और मिस्रियों ने रथ और सवारों को संग लेकर लाल समुद्र तक तुम्हारा पीछा किया। और जब तुम ने यहोवा की दोहाई दी तब उसने तुम्हारे और मिस्रियों के बीच में अन्धियारा कर दिया, और उन पर समुद्र को बहाकर उनको डुबा दिया; और जो कुछ मैं ने मिस्र में किया उसे तुम लोगों ने अपनी आँखों से देखा; फिर तुम बहुत दिन तक जंगल में रहे। तब मैं तुम को उन एमोरियों के देश में ले आया, जो यरदन के उस पार बसे थे; और वे तुम से लड़े, और मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया, और तुम उनके देश के अधिकारी हो गए, और मैं ने उनका तुम्हारे सामने से सत्यानाश कर डाला।

फिर मोआब के राजा सिप्पोर का पुत्र बालाक उठकर इस्राएल से लड़ा; और तुम्हें शाप देने के लिए बोर के पुत्र बिलाम को बुलवा भेजा, परन्तु मैं ने बिलाम की नहीं सुनी; वह तुम को आशीष ही आशीष देता गया; इस प्रकार मैं ने तुमको उसके हाथ से बचाया। तब तुम यरदन पार होकर यरीहो के पास आए, और जब यरीहो के लोग, और एमोरी, परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी, हिब्बी, और यबूसी तुम से लड़े, तब मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में कर दिया।

और मैं ने तुम्हारे आगे बर्रों को भेजा, और उन्होंने एमोरियों के दोनों राजाओं को तुम्हारे सामने से भगा दिया; देखो, यह तुम्हारी तलवार या धनुष का काम नहीं हुआ। फिर मैं ने तुम्हें ऐसा देश दिया जिस में तुम ने परिश्रम न किया था, और ऐसे नगर भी दिए हैं जिन्हें तुम ने न बसाया था, और तुम उनमें बसे हो; और जिन दाख और जैतून के बगीचों के फल तुम खाते हो उन्हें तुम ने नहीं लगाया था।

आपने समझ लिया? परमेश्वर कहता है, "यह सब मैं ने किया," और यही मुख्य बात है। परमेश्वर ने यहोशू को देश इस प्रकार से दिया कि महिमा केवल परमेश्वर को मिले। आप इसके बारे में सोचें, कि यरीहो के पहले बड़े युद्ध में, वायदे के देश में पहले बड़े नगर को जीतने के लिए, परमेश्वर ने युद्ध की ऐसी योजना क्यों बनाई? वे कोई कथन कह सकते हैं, उनके पास सारी सैन्य रणनीतियाँ उपलब्ध हैं, इन सबके बीच, यहोशू 6 में परमेश्वर यहोशू के पास आकर कहता है, "अपने संगीतकारों को बुला और तुम सब कुछ दिनों के लिए गीत गाओ।" क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यहोशू सेना के पास जाता है, ऐसे लोगों के पास जो युद्ध करने के लिए अवसर का इन्तजार कर रहे हैं, और कहता है, "हम इस कार्य को संगीतकारों को सौंप रहे हैं।" और, आप जानते हैं, "उन्होंने कुछ धुनों पर कार्य किया है, और वे कुछ दिनों तक उन्हें बजायेंगे। और फिर, बात यह है। एक दिन हम ऊँची आवाज में चिल्लायेंगे और दीवारें गिर पड़ेंगी।"

यह कैसी सनक है। युद्ध की ऐसी योजना? इससे न चूकें। परमेश्वर वह कर रहा है जिसे वह सम्पूर्ण इतिहास में करता है। वह लोगों को, उनकी घटनाओं को संगठित कर रहा है, नियंत्रित कर रहा है, जिस से जो कुछ भी होता है उसके लिए अन्त में परमेश्वर को महिमा मिले। क्योंकि उस नगर को जीत लेने पर, जैसा कि उसने यहोशू 6 में कहा था – मैं आपको वह बताता हूँ जिसे आप नहीं देखते हैं। आप इस्राएलियों को तुरही बजाने वालों के पास जाकर यह कहते हुए नहीं देखते हैं कि उन्होंने उस सप्ताह एक अतुल्य कार्य किया। जैसे, "राल्फ, मैं ने तुम्हें कभी इतना अच्छा संगीत बजाते हुए नहीं देखा। हैरी, तुमने बहुत अच्छा कार्य किया। यह अद्भुत था। तुम लोग अतुल्य हो।" आप लोगों को यह कहते हुए देखते हैं, "केवल परमेश्वर ही इसे कर सकता था।" आप समझ रहे हैं – आपके पास हियाव तब होता है जब आप परमेश्वर की महिमा के लिए जीते हैं। अब, यहाँ यहोशू में यही तस्वीर है।

और अन्तिम बात जो मैं करना चाहता हूँ वो यह कि यहाँ कुछ ऐसा पढ़ना जो यहाँ नहीं है। परन्तु मैं चाहता हूँ कि आप जल्दी से यह करें। मैं चाहता हूँ कि हम गूगल अर्थ जैसा कार्य करें, और, हम यहाँ देख चुके हैं, अब एक पल के लिए पीछे हटें और छुटकारे के इतिहास की सम्पूर्ण तस्वीर पर नजर डालें। और जब मैं इस पद का अध्ययन और मनन कर रहा था, तो मैं अपने आप को पवित्रशास्त्र की एक और तस्वीर के बारे में सोचने से नहीं रोक सका जो यहाँ के बारे में बहुत कुछ बताती है, जहाँ हम बिल्कुल ऐसी ही वास्तविकताओं को देखते हैं।

इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ जल्दी से मत्ती 28 पर आएँ, और मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ उस दिन के बारे में सोचें जब यीशु अपने चेलों के साथ पहाड़ पर खड़े हुए। वह उनको छोड़ कर जाने और उन्हें संसार में भेजने वाले हैं। ये लोग, जिन्हें पृथ्वी की छोर तक सुसमाचार को ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, वे अत्यधिक भयभीत हैं। और यीशु उन्हें देखकर उनसे कहते हैं, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।"

इसके बारे में सोचें। ये वचन उस दिन केवल उन चेलों से ही नहीं कहे गए थे। ये वही वचन हैं जो हमें आगे बढ़ाते हैं, जब हम बर्मिंघम के आन्तरिक शहर और भारत की विशाल आवश्यकता को देखते हैं। और इसलिए मैं हम से कहता हूँ, इस पद के आधार पर, उसके प्रकाश में जो हम पुराने नियम में पहले ही देख चुके हैं, भाइयो और बहनो, आइए हम परमेश्वर के वायदे की घोषणा करें। स्वर्ग और पृथ्वी का सारा

अधिकार उसे दिया गया है। यह एक वायदा है। परमेश्वर ने यीशु को सब लोगों के ऊपर अधिकार दिया है।

यहाँ तस्वीर यह है कि यीशु बचाता है, यीशु छुड़ाता है। वह हमारे पापों के लिए, हमारी जगह क्रूस पर मरा, और भाइयो और बहनो, उसने पाप को जीत लिया है और मृत्यु को जीत लिया है और कब्र को जीत लिया है। और वह मृतकों में से जी उठा है, वह पिता के पास जाने वाला है, ऊँचे पर उठाया जाने वाला है, पिता के दाहिने हाथ बैठने वाला है, और वह कहता है, "सब लोगों के ऊपर सारा अधिकार मेरा है।" परमेश्वर ने उसे सब लोगों के ऊपर राज्य, शासन और अधिकार दिया है। सारे लोग, हर एक घुटना एक दिन टिकेगा और हर एक जीभ एक दिन अंगीकार करेगी कि वह प्रभु है। और उसका अर्थ – इसलिए, उसका अर्थ है कि परमेश्वर ने हमें सब लोगों के बीच सफलता की गारण्टी दी है।

इसके बारे में सोचें। इसे हम जानते हैं। प्रकाशितवाक्य 5, उसके पास अधिकार है। उसने हर भाषा और गोत्र और देश के लोगों में से पुरूषों और स्त्रियों को मोल लिया है। प्रकाशितवाक्य 7, एक दिन आ रहा है जब हर जाति के लोग परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर खड़े होकर, उसके उद्धार के लिए, उसकी स्तुति करेंगे। इसका अर्थ है कि आप और मैं भारत में सुसमाचार से वंचित किसी भी जाति के पास जा सकते हैं, और अपने भाइयों और बहनों के साथ सैंकड़ों सुसमाचार से वंचित गाँवों तक पहुँच सकते हैं, और हम जान सकते हैं जब हम विभिन्न जातियों के लोगों के पास जाते हैं तो वहाँ ऐसे लोग होंगे जो विश्वास करेंगे, और इन लोगों में से हर जाति के लोग परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे।

यह निश्चय है। यह महान निश्चय है। यही सफलता है। यही सफलता है। यहोशू 1 में अत्यधिक तोड़–मरोड़ की गई है, और सम्पन्नता के सुसमाचार को सही ठहराने के लिए सफलता और सम्पन्नता के उसके वायदों का प्रयोग किया जाता है। सफलता को इस आधार पर परिभाषित नहीं किया जा सकता कि आपके पास कितने घर या कारें, सामान, पदोन्नतियाँ या उपलब्धियाँ हैं। सफलता की परिभाषा सुसमाचार को सब लोगों में फैलाने के लिए अपने जीवन को देने, और ऐसा करने में परमेश्वर के उद्देश्य की खोज करने में है। परमेश्वर उसे अधिकार दिया है, हमें सफलता की गारण्टी दी है। इसलिए आइए हम परमेश्वर के वायदे का दावा करें, फिर परमेश्वर की आज्ञा को मानें। जाओ और चेले बनाओ।

भाइयो और बहनो, आओ हम बर्मिंघम के आन्तरिक शहर और भारत में चलें, और सुसमाचार हमारे होठों पर हो। हर कदम पर सुसमाचार को बुदबुदायें, यह निरन्तर हमारे होठों पर रहे, और सुसमाचार हमारे जीवनों

में रहे। यह प्रकट हो, भाइयो और बहनो, कि हम अपने समय में सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और हमने इसे बोला है और हमने इसे दिखाया है, हमने इसकी घोषणा की है और हमने इसका प्रदर्शन किया है। आओ हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें और जानें कि हमारी सफलता इस बात पर निर्भर नहीं है कि हम कितने नवीन हैं या कितने मजबूत या ताकतवर हैं, बल्कि हमारी सफलता इस बात पर निर्भर है कि हम कितने आज्ञाकारी हैं।

आइए हम परमेश्वर की आज्ञा को मानें। और इस प्रक्रिया में आओ हम परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव करें। वही वायदा, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।" वही वायदा। परमेश्वर अब्राहम से बात करता है और कहता है, "मैं तेरे साथ रहूँगा।" वह इसहाक से बात करता है और कहता है, "मैं तेरे साथ रहूँगा," और याकूब से, वह कहता है, "मैं तेरे साथ रहूँगा," और मूसा से, उसने कहा, "मैं तेरे साथ रहूँगा," और यहोशू से, उसने कहा, "जैसे मैं मूसा के संग रहा, वैसे ही तेरे संग रहूँगा।" और यथार्थ, यह वही परमेश्वर है जिसने अब्राहम, इसहाक और याकूब और मूसा और यहोशू से बात की। यह वही परमेश्वर है जो हमसे कह रहा है, "मैं तेरे साथ हूँ।"

यह अद्भुत है। "मैं तुम्हें अकेला नहीं छोडूँगा। जब तुम कठिन स्थानों पर कदम रखते हो, तो मैं तुम्हें कभी नहीं त्यागूँगा। मार्ग में हर कदम पर मैं तुम्हारे संग रहूँगा।" और परिणामस्वरूप, संसार के दृष्टिकोण से, हमें सावधान रहना चाहिए। शायद हमें थोड़ा पीछे हटना चाहिए और इस बात को थोड़ा दबाना चाहिए और अपने आपको कठिन स्थानों से दूर रखना चाहिए, क्योंकि इसमें खतरा है। और यदि हम अकेले हैं, तो फिर हमें ऐसा ही करना चाहिए। परन्तु जब तक हम परमेश्वर के वायदों पर भरोसा रखते हैं और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, तब तक हम परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति निश्चित हैं। और परमेश्वर की उपस्थिति के साथ, हमें इस कार्य में सावधान रहने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर की उपस्थिति के साथ, हम सारा खतरा उठा सकते हैं।

अब, मैं सावधान रहना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि लोग यहाँ ज्यादा घबरा जाएँ। शायद थोड़ी घबराहट, लेकिन ज्यादा नहीं। मैं खतरे की खातिर खतरा उठाने की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं अनावश्यक खतरों, उन खतरों को उठाने की बात नहीं कर रहा हूँ जो बुद्धि को पीछे छोड़ देते हैं, परन्तु मैं उन खतरों की बात कर रहा हूँ जो हमारे आस–पास की सांसारिक बुद्धि को पीछे छोड़ देते हैं। खतरा जो कहता है कि यदि परमेश्वर के वायदे हैं और परमेश्वर की आज्ञाएँ हमें ऐसा करने के लिए कह रही हैं और परमेश्वर हमारे संग है, तो हम सारा खतरा उठा सकते हैं। और चाहे कुछ भी हो, जीत हमारी है। यदि परमेश्वर के लोग

परमेश्वर के वचन में कदम बढ़ाते हैं तो अतुल्य साहस और निश्चय होता है, क्योंकि परमेश्वर, जिस तरह यहोशू और मूसा और अब्राहम के सामने अपने आपको शक्तिशाली और अपने चरित्र को सत्य दिखाकर आनन्दित हुआ था उसी प्रकार वह हमारे साथ भी करना चाहता है।

इसलिए आओ हम परमेश्वर की महिमा को फैलाएँ। आओ हम ईमानदार बनें। इस पहाड़ पर खड़े हुए लोग सबसे धारदार औजार नहीं थे। यदि आप एक उच्च स्तरीय टीम को एक साथ मिलाते हैं, वे सर्वोच्च श्रेणी के नहीं हैं, यदि आप मेरा मतलब समझते हैं। और यही खूबसूरती है। यह इन लोगों पर निर्भर नहीं था। वे अपनी कमजोरी के बावजूद पहाड़ पर नहीं खड़े थे। अपनी कमजोरी के कारण वे पहाड़ पर खड़े थे।

और हम ईमानदार बनें, हम संसार के सबसे कुशाग्र लोगों में से नहीं हैं। हम संसार के सबसे चालाक व्यक्ति नहीं हैं। हम सबसे अधिक बुद्धिमान नहीं हैं, हम सबसे अधिक योग्य नहीं हैं, हम संसार के सबसे धनी लोग नहीं हैं। आप संसार के सबसे धनी व्यक्ति को जानते हैं – यदि सबसे धनी नहीं, तो संसार के सबसे अधिक धनी लोगों में से एक ब्रुनई का सुल्तान है। हमारे पास उतने साधन नहीं हैं जितने संसार के पास हैं। आपके पास सर्वाधिक अनुभवी पासबान नहीं है। हम सर्वाधिक प्रभावशाली लोग नहीं हैं। हम संसार के प्रभावशाली केन्द्र नहीं हैं।

इसीलिए मैं प्रेरितों के काम 4:13 को पसन्द करता हूँ। जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं। इसलिए हे परमेश्वर, हमारे आस–पास के लोग उन लोगों में साहस को देखें जो अन्यथा साधारण और मामूली लोग हैं। और वे लोग उस महान परमेश्वर को जानें और समझें कि परमेश्वर की उपस्थिति उनके लिए कार्य कर रही है जो उन से महान है। और इसलिए आओ हम हर स्थान पर जाएँ, और अपने मनों में इस प्रार्थना के साथ इसे करें। हे परमेश्वर देशों को हमें दे और इसे इस प्रकार करें जिस से महिमा केवल आपको मिले।